डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.,बी.एड.पीएच.डी.
अधिव्याख्याता, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर ।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री रघुनाथ सत्याप्पा शिरगांवकर ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए "देवेश ठाकुर के ' इसीलिए ' उपन्यास का अनुशीलन " लघु शोध-प्रबन्ध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ लिखा है । यह उनकी मौलिक रचना है । पूर्व योजना के अनुसार संपन्न इस कार्य में शोधार्थी ने मेरे सुझावों का आद्यंत पालन किया है । जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

शोध-निर्देशक २३ दिसम्बर, ९४।
(डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण)

कोल्हापुर ।
दिनांक :२०-१२-१९९४ ।

Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur - 416 004.

प्रख्यापन

" देवेश ठाकुर के 'इसीलिए' उपन्यास का अनुशीलन " लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्र

(श्री रघुनाथ सत्याप्पा शिरगांवकर)

कोल्हापुर ।

दिनांक - २०-१२-१९९४ ।

प्राक्कथन

हिन्दी के प्रगतिचेता, प्रतिबध्द और विवादग्रस्त रचनाकार देवेश ठाकुर आज हिन्दी के प्रमुख समीक्षको तथा उपन्यासकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उनका लेखन सामाजिक चेतना से संपृक्त है। समकालीन रचनाकारों में देवेशजी का नाम अज्ञात एवं अपरिचित नहीं है। समीक्षा क्षेत्र के साथ-साथ कृति लेखन में भी उन्होंने अपने निश्चित, प्रगतिशील और वस्तुपरक दृष्टिकोण से एक ओर अनेक विवादों को आमंत्रित किया है, तो दूसरी ओर ख्यातिप्राप्त विद्वानों में प्रशंसा भी अर्जित की है। इस प्रकार अपने विविधमुखी और खास कर उपन्यास लेखन के माध्यम से उन्होंने अपनी रचनाधर्मी दृष्टि को सफलता के साथ प्रतिष्ठित किया है।

आत्मकथनात्मक शैली में लिखा हुआ देवेश ठाकुर का पहला उपन्यास ' प्रसंग' जब मैंने पढा तब इस लेखक के लेखन के प्रति मैं अनजाने में आकर्षित हुआ। ' प्रसंग' के बाद मैंने ' इसीलिए ' उपन्यास पढा। ' इसीलिए' उपन्यास गहराई से पढने के पश्चात मुझे पता चला कि ' संपन्नता' सुख की गारंटी नहीं है। भौतिक सुविधाओं से संपन्न व्यक्ति सुखी नहीं बनता। भौतिक सुविधाओं से संपन्न व्यक्ति को अगर सुखी बनना है, तो उसे अपनी दृष्टि को व्यापक बनाकर जीना पडेगा। इस दृष्टि से ' इसीलिए' उपन्यास बहुत अच्छा लगा। तभी एम.फिल.के लघु शोध - प्रबन्ध के लिए प्रस्तुत उपन्यास को चुनकर मैंने उसका विशेष अध्ययन करने का दृढ संकल्प किया। इन पंक्तियों में मेरा वह संकल्प साकार हुआ है।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में कुछ प्रश्न खडे हुए वे इस प्रकार हैं ---

१) देवेश ठाकुर के ' इसीलिए' उपन्यास में प्रभावी पात्र कौन-सा है।
२) ' इसीलिए ' उपन्यास में किन-किन समस्याओं की ओर संकेत किया है।
३) ' इसीलिए ' उपन्यास में क्या दार्शनिकता है ?

अध्ययन के उपरांत, उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मुझे मिले उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रस्तुत प्रबंध के प्रथम अध्याय में देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रस्तुत किया है। इस अध्याय में `व्यक्तित्व` के अंतर्गत जन्म,माता-पिता,शिक्षा, नौकरी,विवाह ,अध्यापकीय जीवन,साहित्य में पदार्पण और उनकी लोकप्रियता आदि बातों का विवेचन प्रस्तुत किया है। उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है।` कृतित्व` के अंतर्गत उपन्यास,कहानी,कविता,एकांकी,समीक्षा आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है। अंत में अध्याय का निष्कर्ष दिया है।

द्वितीय अध्याय में `इसीलिए` उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन किया है। कथावस्तु को पाँच विभागों में विभाजित करके उसका विश्लेषणात्मक दृष्टि से अध्ययन किया है। उपन्यास का आरंभ,विकास,चरमसीमा,अवरोह और अंत किस प्रकार है इसका विवेचन किया है।अन्य उपन्यासों की तुलना में यह एक अनूठी शैली में लिखा हुआ उपन्यास है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिये हैं।

तृतीय अध्याय में देवेश ठाकुर के `इसीलिए` उपन्यास में चित्रित प्रमुख स्त्री तथा पुरुष पात्रों का चित्रण किया है। इसमें मनोरंजन अवस्थी तथा मीनाक्ष दलाल महत्वपूर्ण पात्र हैं। इनके साथ मनोरंजन के पिता,रघुवंशी,बब्बन,बंदू राव आदि पुरुष पात्रों का तथा मनोरंजन की माता,वर्णा,चंद्रा आदि स्त्री पात्रों का चित्रण भी किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज किया हैं।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत उपन्यास में चित्रित महानगरीय,प्रशासनीय,तथा आदिवासी संबंधी समस्याओं का चित्रण किया है। इसमें अन्य समस्याओं की अपेक्षा महानगरीय समस्याओं का विश्लेषण विशेष महत्वपूर्ण है। प्रशासनीय समस्याओं में भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था,कानून,प्रशासन व्यवस्था,धन की समस्या का चित्रण किया है। आदिवासी लोगों की समस्या में सीकरखेडी के आदिवासियों की मकान,मजदूरी, पेट कपडा,बल्ब तथा आर्थिक आदि समस्याओं का चित्रण किया है

अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिये हैं ।

पंचम अध्याय का शीर्षक है ` इसीलिए ` उपन्यास में दार्शनिकता` इस अध्याय में दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति,परिभाषा,क्षेत्र,साहित्य के साथ उसका संबंध आदि बातों का विश्लेषण कर ` इसीलिए` में व्याख्यायित दार्शनिकता का विवेचन किया है । मार्क्स और गाँधी दर्शन की तुलना करके ` इसीलिए` की दार्शनिकता कैसी है यह स्पष्ट किया है ।

अंत में उपसंहार दिया गया है । यह प्रबंध का सार-रूप है । इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पध्दतिसे निकाले गए निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में दिये गए हैं। उपसंहार के उपरांत संदर्भ ग्रंथ सूची दी है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता करने वाले हित चिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूँ ।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए डॉ.अर्जुन चव्हाण जैसे विद्वान गुरुवर मार्गदर्शक के रूप में मिल गए । इसे मैं अपना भाग्य समझाता हूँ । अनगिनत महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी आपने जिस आत्मीयता से मुझे मार्गदर्शन दिया ,मेरी असंख्य गलतियों को सुधारा इसके लिए मैं आपके प्रति अतीव कृतज्ञ हूँ । सतत प्रेरणा, सतपरामर्श एवं प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है । यदि आप बार-बार सजग न करते तो शायद यह लघु शोध-प्रबन्ध अधूरा रह जाता । आपके शांत, गंभीर व्यक्तित्व एवं स्नेहल भाव के कारण यह प्रबन्ध पूर्ण हो सका । इस गुरु-ऋण से मैं आजीवन मुक्त नहीं हो सकता ।

मैं श्रध्देय देवेश ठाकुरजी का हृदय से आभार मानता हूँ क्योंकि प्रस्तुत उपन्यास पर विचार-विमर्श कर मेरी शंकाओं का समाधान कर मुझे प्रोत्साहित किया । अपनी मौलिक रचनाएँ भेजकर मेरी मदद की । अत: इस सहयोग के लिए मैं आपका आजन्म ऋणी रहूँगा ।

आदरणीय गुरुवर्य वसंत मोरे जी ,डॉ.पी.एस.पाटील जी, मा.वेदपाठक जी,मा.तिवले जी तथा श्रीमती भागवत जी का आशीर्वाद और प्रेम

मेरे साथ रहा है । उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करता हूँ ।

मैं जिस महाविद्यालय में सेवारत हूँ उस यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, इस्लामपूर के प्राचार्य एल.जी.दामोले,तथा मेरे सहकर्मियों की शुभकामनाएँ मेरे साथ रही । अत: मैं उनका हृदय से आभारी हूँ । जिनका स्वभाव निर्लोभ एवं हितैषी रहा है ऐसे परममित्र श्री अंकुश बेलवरकरजी का आभारी हूँ ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथो की प्राप्ति मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर तथा यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,इस्लामपुर के ग्रंथालय से हुई । अत: इनके ग्रंथपालों का मैं ऋणी हूँ ।

इस शोध-कार्य का टंकन करने वाले श्री बाळकृष्ण रा.सावंत,कोल्हापुर के प्रति हृदयपूर्वक आभारी हूँ ।

मेरी पूज्य माता तथा मेरे बड़े भाई के आशीर्वाद के बिना मेरे लिए हर कार्य असंभव है । उनके आशीर्वाद से ही मैं यह कार्य पूरा कर सका । मैं निरंतर उनकी छत्र-छाया में रहने की कामना करता हूँ । मेरी पत्नी सुजाता की प्रेरणा तथा मेरा पुत्र करन का गिलहरी जैसा सहयोग भी मिला । साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञात लोगों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई अंत में उन सबके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ विद्वानों के सामने प्रस्तुत करता हूँ ।

शोध - छात्र

(श्री रघुनाथ सत्याप्पा शिरगांवकर)

कोल्हापुर ।

दिनांक २०-१२-१९९४ ।